आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711

पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/2021-23

पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 8 अंक : 12 अगस्त, 2021 मूल्य : ₹2.00

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

मार्गदर्शन : कुलपति प्रो. (डॉ.) विष्णु शर्मा

कुलपति सन्देश

पर्यावरण संरक्षण हेतु वृक्षारोपण जरूरी

पेड़–पौधे, वनस्पतियों व पशुओं का मानव जीवन में अत्यधिक महत्त्व है। ये हमारे जीवन के लिए अत्यन्त उपयोगी हैं तथा मानव जीवन के आधार हैं। हर प्राणी अपने जीवनयापन हेतु वनस्पति जगत पर आश्रित है, यदि वृक्ष नहीं रहेंगे तो जीवन संकट में पड़ जायेगा। यह पर्यावरणीय असंतुलन हमारे जीवन के सभी क्षेत्रों जैसे स्वास्थ्य, आचरण, अर्थव्यवस्था, राजनीति, संस्कृति व भविष्य को प्रभावित करता है। पर्यावरण संरक्षण से तात्पर्य है कि पर्यावरण की सुरक्षा करना। भारतीय समाज में आदिकाल से ही पर्यावरण संरक्षण को महत्त्व दिया गया है। भारतीय समाज में पेड़–पौधों की पूजा की जाती है। विभिन्न वृक्षों में देवताओं का वास माना जाता है। भारतीय समाज में तुलसी, पीपल, बील, कदंभ, अशोक आदि वृक्षों को विभिन्न अवसरों पर पूजा जाता हैं। बढ़ती आबादी की जरूरतों को पूरा करने, बढ़ते शहरीकरण व औद्योगिकीकरण के लिए वृक्षों की अंधाधुंध कटाई की जा रही हैं। देश में वन क्षेत्र घट रहा है। इस घटते वन क्षेत्र को राष्ट्रीय लक्ष्य 33.3 प्रतिशत तक लाने के लिए सभी को मिलकर पेड़–पौधे लगाने होंगे। पर्यावरण संरक्षण व पौधारोपण प्रत्येक नागरिक का दायित्त्व है। यह जानकर प्रसन्नता है कि जनमानस में पर्यावरण के प्रति जागरूकता आ रही है, लोग पेड़–पौधों के महत्त्व को समझने लगे हैं। वृक्षारोपण पर्यावरण को हरा–भरा और स्वच्छ बनाने के लिए एक महत्त्वपूर्ण कदम है। किसान व पशुपालक भाइयों का पर्यावरण से गहरा नाता रहा है। ये बढ़ते पर्यावरणीय असंतुलन के संरक्षण हेतु जैविक खेती को अपना रहे हैं। सभी किसान भाई कृषि वानिकी को अपनाकर पर्यावरण संरक्षण में योगदान दे सकते हैं। फसलों के साथ–साथ वृक्ष भी लगाने चाहिए। खेतों की मेड़ो पर, गांवों की शामिलात भूमि पर, परती भूमि तथा जिस भूमि पर कृषि नहीं की जा रही, उस भूमि पर पेड़–पौधे लगाकर पर्यावरण संरक्षण में योगदान दे सकते हैं। अभी मानसून का दौर चल रहा है, किसानों को अपनी खेती–बाड़ी के साथ–साथ खेत–खलिहानों आदि में पौधरोपण भी करना चाहिए। इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि वृक्ष ऐसे लगाएं जो जल्दी उगे व जल्दी वृद्धि करें। बहुत सी सरकारी व गैर सरकारी संस्थाएं पौधारोपण की मूहिम चला रही है। हमें पेड़ों को कटने से बचाना चाहिए और अधिक से अधिक पौधे लगाने चाहिए तथा आस–पास के लोगों को पौधारोपण हेतु प्रोत्साहित करना चाहिए। वृक्षारोपण पर्यावरण संरक्षण हेतु महत्त्वपूर्ण एक कदम है, लेकिन सिर्फ पौधे लगाना ही काफी नहीं है, पौधों की समुचित देखभाल भी करनी चाहिए, ताकि वे वृक्ष बन सके।

आओ पौधे लगाएं, अपनी धरा को हरा–भरा बनाएं।

कर्नल (प्रो.) विष्णु शर्मा

किसी देश की महानता का आंकलन इस बात से किया जा सकता है कि लोग पशुओं से कैसा व्यवहार करते हैं।

–महात्मा गांधी

विश्वविद्यालय समाचार

वेटरनरी विश्वविद्यालय व राजस्थान गो सेवा परिषद मिलकर करेंगे काम
गोबर व गौमूत्र से आमदनी प्राप्त करने के लिए होंगे प्रशिक्षण कार्यक्रम

बीकानेर वेटरनरी विश्वविद्यालय और राजस्थान गो सेवा परिषद गोबर एवं गोमूत्र से आमदनी प्राप्त करने के लिए प्रदेशभर के पशुपालकों को गोबर से खाद व गोमूत्र से कीट नियंत्रक बनाने का प्रशिक्षण देंगे। इस आशय का एमओयू कुलपति डॉ विष्णु शर्मा के सान्निध्य में वेटरनरी विश्वविद्यालय एवं गो सेवा परिषद् के मध्य किया गया। इस अवसर पर कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने बताया कि वेटरनरी विश्वविद्यालय अपने पशु विज्ञान केन्द्रों, पशुधन अनुसंधान केन्द्रों एवं महाविद्यालयों के द्वारा गौमूत्र एवं गोबर के उपयोग की विकसित पारंपरिक तकनीकों एवं ज्ञान को प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से यथासंभव पशुपालकों तक प्रसारित करने का कार्य करेगा। इस एमओयू के तहत चरणबद्ध रूप से प्रदेश के पशुपालकों में इस क्षेत्र के प्रति जागरुकता, उत्पादन और विपणन प्रणाली विकसित की जाएगी। इसके साथ ही भविष्य में गो सेवा परिषद्, बीकानेर एवं वेटरनरी विश्वविद्यालय के पशुधन अनुसंधान केन्द्रों पर साझा अनुसंधान की योजनाओं पर पारस्परिक सहमति से कार्य करेंगे। परिषद के गजेंद्र सिंह सांखला ने परिषद के उद्देश्यों ओर कार्यों की जानकारी दी। एमओयू पर दोनों पक्षों ने हस्ताक्षर कर पत्रावली का आदान प्रदान किया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. राजेश कुमार धूड़िया, निदेशक मानव संसाधन विकास प्रो. त्रिभुवन शर्मा, परिषद के अध्यक्ष हेम शर्मा, सचिव अजय पुरोहित, उपाध्यक्ष रिद्धकरण सेठिया, राजेश बिन्नानी एवं मन्नू बाबू सेवग उपस्थित रहे।

विश्व जूनोसिस दिवस पर अन्तर्राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन

विश्व जूनोसिस दिवस पर वेटरनरी विश्वविद्यालय के संघटक स्नातकोत्तर पशुचिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, जयपुर द्वारा ''कोविड–19: जूनोसिस से निपटने के लिय हम यहाँ से कहा जाये'' विषय पर अन्तर्राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया गया। इस वेबिनार में 11 देशों के चार हजार से ज्यादा प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रो. संजीता शर्मा ने सभी अतिथियों का स्वागत किया तथा विशिष्ट अतिथियों और वक्ताओं की सम्पूर्ण जानकारी साझा की। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने वेबिनार को सम्बोधित करते हुए कहा कि कोविड जैसे जूनोटिक रोगों से लड़ने के लिये हमें अपनी रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाना होगा जो कि शुद्ध पशु प्रोटीन के माध्यम से सम्भव हो सकता है। उन्होंने जूनोटिक रोगों के प्रसारण श्रृंखला को तोड़ने में पशुचिकित्सकों की भूमिका को अहम् बताया तथा इसे एक अवसर के रूप में लेने पर जोर दिया। ओ.आई.ई. के दक्षिण एशिया क्षेत्रीय प्रतिनिधी डॉ. किनजेंग दुक्पा ने आने वाले समय में महामारियों की रोकथाम में ओ. आई.ई. की भूमिका पर चर्चा की। आई.एल.आर.आई. के दक्षिण एशिया क्षेत्रीय प्रतिनिधी डॉ. एच. रहमान ने जूनोटिक बीमारियों की प्रभावी रोकथाम के लिये पशुचिकित्सा, मेडिकल साइंस और पर्यावरण विज्ञान को मिलकर प्रयास करने पर जोर दिया। भारतीय पशुचिकित्सा परिषद् के अध्यक्ष डॉ. उमेश चन्द शर्मा ने जूनोटिक बीमारियों की रोकथाम के लिये आई.सी.वी.आर. के निर्माण पर जोर दिया जिससे इस क्षेत्र में अनुसंधान को बढ़ावा दिया जा सकें। राजुवास के पूर्व कुलपति एवं राज्यपाल सलाहकार परिषद् के सदस्य प्रो. ए.के. गहलोत ने वेटरनरी पब्लिक हेल्थ को नेशलन हेल्थ मिशन का अंग बनाने की बात कही तथा जूनोटिक रोगों की रोकथाम के लिये विशिष्ट तकनीकों जैसे रिमोट सेन्सिंग, जी.आई.एस. आदि का उपयोग करने की भी सलाह दी। डब्ल्यू.एच.ओ. की डॉ. बर्नादेते अबेला–राईडर, आई.सी.ई.आर.–निवेदी के डॉ. जे. हीरामठ, आई.वी.आर.आई. के डॉ. एस.वी. एस. मलिक एवं एन.ए.वी.एस. के अध्यक्ष डॉ. डी.वी.आर. प्रकाश राव ने जूनोसिस की रोकथाम में एकल स्वास्थ्य विषय पर अपने विचार व्यक्त किये। आयोजन सचिव प्रो. डी.एस. मीणा ने प्रारंभ में विषय प्रवर्तन किया। विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक प्रो. हेमन्त दाधीच ने सभी का आभार व्यक्त किया तथा डॉ. बरखा गुप्ता ने वेबिनार का संचालन किया।

गोपाल रत्न पुरस्कार हेतु ऑनलाईन आवेदन आमन्त्रित

पशुपालन, मत्स्य और डेयरी मंत्रालय, भारत सरकार की ओर से स्वदेशी दुधारू गाय/भैंसों की डेयरी के लिए किसानों, सर्वश्रेष्ठ कृत्रिम गर्भाधान तकनीशियन तथा सहकारी/कम्पनी अधिनियम के तहत ग्राम स्तर पर स्थापित सहकारी समिति/एमपीसी/एफपीओ दुग्ध उत्पादक कम्पनियों को वर्ष 2021 में गोपाल रत्न पुरस्कार दिये जाने के लिए ऑनलाईन आवेदन आंमत्रित किये गये है। राष्ट्रीय गोकुल मिशन योजना के तहत गोपाल रत्न पुरस्कार के लिए तीनों श्रेणी में प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान के लिए क्रमशः 5 लाख, 3 लाख एवं 2 लाख रूपये की राशि पारितोषिक स्वरूप प्रदान की जायेगी। इन्छुक आवेदक पशुपालन, मत्स्य एवं डेयरी विभाग, भारत सरकार की वेबसाइट www.dahd.nic.in पर जाकर **15 सितम्बर** सांयकाल 5.00 बजे तक ऑनलाईन आवेदन कर सकते हैं। इच्छुक आवेदक ई गोपाला ऐप अथवा पशुपालन विभाग, राजस्थान की वेबसाइट www.animalhusbandry.rajasthan.gov.in अथवा राजस्थान पशुधन विकास बोर्ड की वेबसाइट http://www.ridb.nic.in पर जाकर विस्तृत जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

राजुवास ई-पशुपालक चौपाल का आयोजन

पशुजन्य ब्रुसेलासिस रोग से बचाव ही कारगर उपाय

वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा राज्यस्तरीय ई–पशुपालक चौपाल 14 जुलाई को आयोजित की गई। पशुजन्य रोग ब्रुसेलोसिस विषय पर विशेषज्ञ प्रो. प्रदीप कुमार कपूर ने पशुपालकों से संवाद किया। कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने चौपाल में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि आज की वार्ता का विषय बड़ा ही सामायिक है। आज पूरा विश्व नित नई बीमारियों का सामना कर रहा है इनमें से ज्यादातर रोग पशु जनित है, अतः हमें विभिन्न पशु उत्पाद जैसे दूध, अण्डा, मांस इत्यादि का सुरक्षित खाद्य तन्त्र बनाना होगा एवं वातावरण में उपस्थित हानिकारक कारकों का पता लगाकर नियंत्रण करना होगा ताकि मनुष्य, पशु एवं वातावरण का सुरक्षित तंत्र तैयार हो सके। आयोजन सचिव एवं निदेशक प्रसार शिक्षा प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने विषय प्रवर्तक करते हुए बताया कि मनुष्य में फैलने वाले 70 से 75 प्रतिशत संक्रामक रोग पशुजनित है। इन रोगों पर नियंत्रण करके हम पशुपालकों को आर्थिक नुकसान से बचा सकते हैं। आमंत्रित विशेषज्ञ प्रो. प्रदीप कुमार कपूर, प्रिंसिपल खालसा पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, अमृतसर ने विस्तृत चर्चा करते हुए बताया कि ब्रुसेलोसिस रोग गाय, भैंस, भेड़, बकरियों व सूकर में मिलता है। इस रोग से ग्रसित पशुओं में गर्भावस्था के अंतिम तीन महीनों में गर्भपात हो जाता है। पशुओं में पूरी तरह जर नहीं गिरती है। ग्रसित पशु के मल, मूत्र, दूध, जर एवं योनि आदि में स्त्राव से संक्रमण दूसरे पशुओं एवं मनुष्यों में फैलता है। संक्रमित मनुष्य में रुक–रुक कर बुखार आना एवं जननांगों में सूजन प्रमुख लक्षणों में से एक है। पशुओं में इस रोग से बचाव हेतु 4 से 8 महीनों की मादा बछिया का टीकाकरण करवाना चाहिए। पशु बाड़े एवं पशुओं की नियमित सफाई रखनी चाहिए। पशुशाला में पशुओं की नियमित जांच करवानी चाहिए एवं रोगी पशुओं को अलग रखना चाहिए। पशु उत्पादों का सेवन पूरी तरह उबालकर एवं पका कर करना चाहिए। इस रोग से बचाव ही प्रमुख उपाय है। ई–पशुपालक चौपाल में राज्यभर के पशुपालक, किसान विश्वविद्यालय के अधिकारिक फेसबुक पेज से जुड़े।

यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पोंसिबिलिटी

विश्वविद्यालय द्वारा गाढ़वाला एवं जयमलसर में पौधारोपण

वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पोंसिबिलिटी के अंतर्गत गोद लिए गांव गाढ़वाला एवं जयमलसर में पौधारोपण अभियान की शुरूआत की गई। यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पोंसिबिलिटी के नोडल अधिकारी, प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, गाढ़वाला परिसर में गुलमोहर का पौधारोपण कर अभियान की शुरूआत की। उन्होंने ग्रामीणों से पर्यावरण को स्वच्छ बनाए रखने का अनुरोध किया। इस अभियान के तहत शीशम, बकेन, गुलमोहर सहित विभिन्न प्रजाति के 501 पौधे वितरित किये गये। विद्यालय के प्राचार्य श्रवण गोदारा एवं यूथ एण्ड इको क्लब की प्रभारी मंजु पालीवाल ने अभियान में सक्रिय भूमिका निभाई। सरपंच प्रतिनिधि मोहनलाल ने पौधारोपण अभियान में सहयोग किया। कार्यक्रम समन्वयक डॉ. नीरज कुमार शर्मा ने अभियान का संचालन किया। इस अवसर पर डॉ. नरेन्द्र सिंह व डॉ. मंगेश कुमार भी उपस्थित थे। वही 30 जुलाई को जयमलसर के सरपंच प्रतिनिधि मदन सिंह ने ग्राम पंचायत भवन परिसर में पौधारोपण कर कार्यक्रम की शुरूआत की। इस दौरान आंगनबाड़ी केन्द्र और राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय परिसर में भी पौधारोपण किया गया। इस कार्यक्रम के तहत शीशम, बकेन, गुलमोहर सहित विभिन्न प्रजाति के पौधे लगाए व गांव में वितरित किये। इस अवसर पर विद्यालय की प्रधानाचार्य अनुराधा जीनगर, आंगनबाड़ी कार्यकर्ता उमा रामावत, कृपालदान एवं मनोज पुरोहित ने सक्रिय भूमिका निभाई।

वेटरनरी विश्वविद्यालय का नवाचार

वन्यजीव प्रबन्धन पर एड ओन सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम शुरू

वेटरनरी विश्वविद्यालय में फील्ड वेटनेरियन एवं पशुचिकित्सकों के लिए ऑनलाइन एड–ओन सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम के तहत "वन्यजीव देखभाल एवं प्रबंधन" विषय पर एड ओन सर्टिफिकेट की शुरूआत की गई। उद्घाटन सत्र में सम्बोधित करते हुए वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने बताया कि वेटरनरी स्नातक, स्नातकोत्तर एवं पीएच.डी. छात्रों के लिए पशुचिकित्सा के विशेष क्षेत्रों में ज्ञान एवं कौशल विकास हेतु नियमित पाठ्यक्रमों के साथ–साथ एड ओन सर्टिफिकेट पाठ्यक्रमों की शुरूआत की गई है। इन पाठ्यक्रमों के माध्यम से ना केवल छात्रों के ज्ञान एवं कौशल का विकास होगा अपितु ये पाठ्यक्रम उनके भविष्य में केरियर विकास में भी सहायक होंगे। फील्ड में कार्यरत पशुचिकित्सक इन पाठ्यक्रमों का हिस्सा बनकर नवीन शोध एवं जानकारियों से अपने आप को कौशल निपुण एवं अपडेट कर सकेंगे। निदेशक मानव संसाधन विकास प्रो. त्रिभुवन शर्मा ने बताया कि वन्यजीव प्रबंधन का क्षेत्र बहुत व्यापक है। इस पाठ्यक्रम के माध्यम से पशुचिकित्सकों को वन्यजीवों के पोषण, व्यवहार, बीमारियां एवं उनके ईलाज के बारे में जानने का अवसर मिलेगा। पाठ्यक्रम के प्रथम दिन प्रो. संजीता शर्मा, अधिष्ठाता, पी.जी. आई.वी.ई.आर., जयपुर ने वन्यजीव परिचय, जैव विविधता एवं संरक्षण विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। पाठ्यक्रम समन्वयक डॉ. साकार पालेचा ने बताया कि इस पाठ्यक्रम हेतु विभिन्न राज्यों के फील्ड पशुचिकित्सक, स्नातकोत्तर एवं पीएच.डी. छात्रों ने अपना रजिस्ट्रेशन करवाया है। विभिन्न वन्यजीव विशेषज्ञों द्वारा कुल 40 व्याख्यान प्रस्तुत किये जायेंगे। कार्यक्रम के प्रारंभ में वेटरनरी कॉलेज अधिष्ठाता प्रो. आर.के. सिंह ने सभी का स्वागत किया। निदेशक अनुसंधान प्रो. हेमन्त दाधीच ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया। विश्वविद्यालय के डीन–डायरेक्टर, शैक्षणिक कर्मचारी एवं विद्यार्थी इस कार्यक्रम उपस्थित रहे।

पशुपालक प्रशिक्षण समाचार

पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़ (चूरू)

पशु विज्ञान केन्द्र, चूरू द्वारा 20, 23 एवं 29 जुलाई को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 69 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ (श्रीगंगानगर)

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ द्वारा 14, 20, 24 एवं 27 जुलाई को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 137 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, बाकलिया (नागौर)

पशु विज्ञान केन्द्र, बाकलिया –लाड़नू द्वारा 20, 26, 28 एवं 30 जुलाई को आयोजित ऑनलाइन एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 105 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर)

पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा 3, 6, 9, 15, 20 एवं 22 जुलाई को आयोजित एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 109 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक

पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक द्वारा 3, 14, 20, 23 एवं 29 जुलाई को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 160 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं द्वारा 3 ,6, 8, 12, 15 एवं 20 जुलाई को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 130 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर द्वारा 8, 12, 16, 19, 22 एवं 24 जुलाई को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षण शिविरों में कुल 151 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा द्वारा 5, 7, 9, 13, 16 एवं 19 जुलाई को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 141 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर)

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर) द्वारा 6, 17, 24 एवं 30 जुलाई को ऑनलाइन एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 156 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुन्दा (चित्तौड़गढ़)

पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुन्दा (चित्तौडगढ़) द्वारा 14, 16 एवं 23 जुलाई को आयोजित एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 73 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर द्वारा 24, 26, 28 एवं 30 जुलाई को ऑनलाइन एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 93 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जोधपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, जोधपुर द्वारा 20, 22 एवं 27 जुलाई को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 65 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़)

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर जिला हनुमानगढ़ द्वारा 15, 27 एवं 30 जुलाई को कृषक एवं पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 118 किसानों एवं पशुपालकों ने भाग लिया।

कोविड़-19 के बचाव एवं जागरूकता के लिए पशु विज्ञान केन्द्रों द्वारा कार्यक्रम

पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय के अधीन राज्य के विभिन्न जिलों में संचालित पशु विज्ञान केन्द्रों द्वारा कोविड़–19 के बचाव एवं जागरूकता अभियान कार्यक्रमों के अन्तर्गत जिलों के पशुपालकों/किसानों एवं आम लोगों को कोरोना महामारी के बचाव हेतु रखी जाने वाली सावधानियां, टीकाकरण के बारे में जानकारी दी गई। माह जुलाई में पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा, सूरतगढ़, लूनकरणसर (बीकानेर), रतनगढ़ (चूरू), कुम्हेर (भरतपुर), बाकलिया (नागौर) टोंक, धौलपुर, झुंझुनूं एवं जोधपुर द्वारा कुल 26 प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन कर कुल 649 पशुपालकों एवं किसानों को इस वैश्विक महामारी से जागरूक कर जानकारी दी गई।

अधिक दूध देने वाली गाय–भैंस में घातक हो सकता है मिल्क फीवर

मिल्क फीवर एक उपापचय संबंधी रोग है जो ज्यादातर गाय–भैंस के ब्याने के कुछ दिनों बाद पशु के रक्त में और मांसपेशियों में कैल्शियम की कमी के कारण होता है। सामान्यतः यह रोग अधिक दूध देने वाले पशुओं के ब्याने के 2–3 दिनों के अन्दर होता है, परन्तु ब्याने के बाद अधिकतम उत्पादन के समय भी हो सकता है। मिल्क फीवर अधिक दूध देने वाली गायों व भैंसों में तीसरे से सातवें ब्यात में अधिक होता है। ब्याने के बाद काफी मात्रा में कैल्शियम खीस के साथ निकलने से इसकी कमी हो जाती है। इस रोग को प्रसूति फीवर अथवा दुग्ध ज्वर भी कहते हैं। हालांकि इस रोग को "मिल्क फीवर" कहते हैं परन्तु इसमें पशु के शरीर का तापमान सामान्य से बहुत कम हो जाता है। पशु के शरीर का तापमान 96 डिग्री से 98 डिग्री फेरनहाइट तक हो सकता है। मिल्क फीवर रोग को लक्षण के आधार पर तीन अवस्थाओं में बांटा जा सकता है :–

प्रथम–उत्तेजित अवस्था:

- उत्तेजना, टेटेनस जैसे लक्षण तथा पशु अधिक संवेदनशील हो जाता है। सिर व पैरों में अकड़न आ जाती है।
- पशु चारा–दाना नहीं खाता है तथा चलने फिरने की अवस्था में नहीं होता है। पशु अपने सिर को इधर–उधर हिलाता रहता है।
- जीभ बाहर लटक जाती है तथा दांत किटकिटाते रहते है।
- पशु के शरीर का तापमान सामान्य या हल्का बढ़ा हुआ रहता है।
- पिछले पैरों में अकड़न व आंशिक लकवा की स्थिति में पशु गिर जाता है।

द्वितीय–गर्दन मोड़कर बैठी हुई अवस्था:

- पशु अपनी गर्दन को एक ओर मोड़कर निढ़ाल सा बैठा रहता है। पशु लेटे रहने की बजाय सीने वाले भाग के सहारे बैठा रहता है।
- थूथन सूख जाती है। पशु के पैर ठंडे पड़ जाते है और शरीर का तापमान कम होता है। पशु में टेटेनस व उत्तेजना अवस्था नहीं रहती है।
- पशु खड़ा नहीं हो पाता है। पशु की मांसपेशियां ढीली पड़ जाती है।
- आंख की पुतलिया फैलकर बड़ी हो जाती है तथा आंखे सूख जाती है।

तृतीय–लेटे रहने की अवस्था:

- पशु सीने के सहारे बैठे रहने की बजाय बेहोशी की हालत में लेटी अवस्था में रहता है और खड़ा नहीं हो पाता है।
- पशु का गोबर रूक जाता है। कई बार पशु पेशाब करना भी बंद कर देता है। पशु के शरीर का तापमान काफी कम हो जाता है।
- इस अवस्था में उचित उपचार न मिलने पर पशु की मृत्यु हो सकती है।

उपचार:

- उपचार जितना जल्दी हो सके, उतना ही अच्छा है। यदि समय पर उपचार नहीं हो तो पशु की मृत्यु 12–24 घंटों में हो जाती है।
- उपचार के लिए पशुचिकित्सक की सलाह पर पशु की नस में धीमी गति से कैल्शियम बोरोग्लूकोनेट चढ़ाने से तुरंत आराम मिलता है।
- मिल्क फीवर की शुरुआती अवस्था में कैल्शियम देने से जादुई ढंग से पशु जल्दी उठ खड़ा होता है।
- उपचार के दौरान यदि पशु लेटा हुआ है तो उसे सहारा देकर बैठाना चाहिए। पशु के नीचे भूसा, बोरी या पुराने गद्दों का सहारा रखना चाहिए।

सावधानियां:

- अधिक दूध देने वाली गाय–भैंस को ब्याने के एक माह पहले से खनिज लवण 75 ग्राम प्रति दिन दाना मिश्रण में दें।
- पशु के ब्याने के 72 घंटे तक थनों से दूध/खीस पूरा खाली नहीं करें।
- पशु को सन्तुलित पौष्टिक आहार ब्याने से कम से कम 20–25 दिन पहले शुरू कर देना चाहिए।
- सर्दी के मौसम में चारे में कैल्शियम की मात्रा बहुत कम हो जाती है। अतः खुराक की तरफ विशेष ध्यान दें ताकि इस रोग से बचा जा सके।
- विटामिन–डी की पूर्ति हेतु पशु को, मौसम को ध्यान में रखते हुए कुछ समय धूप में भी रखना चाहिए।

डॉ. दीपिका धूड़िया
सहायक प्राध्यापक, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

जैविक पशुपालन की उपयोगिता एवं संभावनाएं

विश्व भर में बढ़ती हुई मानव जनसंख्या जैसी गम्भीर समस्या के साथ पर्याप्त भोजन की आपूर्ति के लिए मनुष्य द्वारा अधिक से अधिक खाद्य उत्पादन के उद्देश्य से उपयोग में लिए रसायनों एवं कीटनाशकों के कारण मृदा की उर्वरता के साथ–साथ पारिस्थितिकी तंत्र भी प्रभावित हो रहा है। इसका एकमात्र उपाय यह है कि भारत की परंपरागत भूमि पोषण की नीति को अपनाकर जैविक खेती एवं पशुपालन को बढ़ावा दिया जाए। जैविक उत्पादन अच्छे मानव स्वास्थ्य, कम लागत एवं अधिक उत्पादन के लिए कारगर है। संश्लेषित उर्वरकों एवं संश्लेषित कीटनाशकों के प्रयोग के बिना मृदा की उर्वरकता को निंरतर बनाए रखने के लिए जैविक खाद् को उपयोग में लाकर की जाने वाली खेती को जैविक खेती एवं इसी तरह पशु के संपूर्ण आहार में कीटनाशकों, खरपतवार नाशकों और रोग उपचार के लिए काम में ली जाने वाली एलोपैथिक दवाओं के बिना आधारित पशुपालन पद्धति को जैविक पशुपालन कहते हैं। जैविक खाद् के उपयोग से भूमि की जल धारण क्षमता बढ़ती है तथा मिट्टी की उर्वरकता बढ़ती है, इससे फसलों की उत्पादकता बढ़ती है तथा किसानों की उत्पादन लागत कम आती है तथा आमदनी बढ़ती है। जैविक पशुपालन भी एक अहम् प्रणाली है, क्योंकि अच्छे मानव स्वास्थ्य को दूध एवं अन्य जैविक उत्पादों के उपयोग द्वारा ही सुनिश्चित किया जा सकता है। जैविक खेती का नीति निर्धारण प्रक्रिया में प्रवेश अंतर्राष्ट्रीय बाजार में उत्कृष्ट उत्पाद के रूप में पहचान इसकी बढ़ती महत्ता का प्रतीक है। विगत दो दशकों में विश्व समुदाय में खाद्य गुणवत्ता सुनिश्चित करने के साथ–साथ पर्यावरण को स्वस्थ रखने की जागरूकता भी बढ़ी है जिसके लिए किसानों व अनेक संस्थाओं ने इस विद्या को समान रूप से उत्पादन क्षम पाया है। भारत में निजी एवं शासकीय संस्थाओं द्वारा जैविक खेती एवं जैविक क्षेत्रों के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया गया है इन संस्थाओं द्वारा दिये गये योगदान में तकनीकी क्षमता विकास, राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय बाजार निर्माण तथा स्थानीय मानकों व प्रमाणीकरण प्रक्रिया निर्धारण प्रमुख है। जैविक उत्पाद की वैधानिक मान्यता तभी है जब वह उत्पाद जैविक खेती नियत राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय मानकों पर खरा उतरता हो। जैविक प्रमाणीकरण एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया जिसके अंतर्गत मान्यता प्राप्त जैविक प्रमाणीकरण संस्थाओं द्वारा जैविक उत्पादन की विभिन्न अवस्थाओं जैसे, उत्पादन, प्रसंस्करण, भण्डारण आदि का राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय जैविक मानकों के आधार पर आंकलन करने के पश्चात् ही किसान को ''प्रमाणित जैविक खेत/उत्पाद'' का प्रमाण–पत्र दिया जाता है एवं उस किसान को ''प्रमाणित जैविक उत्पादक किसान'' कहा जाता है। भारत एवं राजस्थान सरकार द्वारा समय–समय पर विभिन्न योजनाओं द्वारा जैविक खेती को प्रोत्साहित करने के लिए समुचित प्रयास किए जा रहे हैं। भारत में जैविक खेती की संभावनाएं तभी उज्जवल हो सकती है, जब सरकार जैविक खेती करने वालों को प्रमाणीकृत खाद् स्वयं के संस्थानों से सब्सिडी पर उपलब्ध करवाए तथा आमदनी की गारंटी का बीमा की व्यवस्था करके प्रारम्भिक सालों में होने वाले घाटे की क्षतिपूर्ति करें। किसान को भी जैविक की खेती की पंजीयन कराना चाहिए जिससे खाद्यान्न फसल तथा फल को अच्छा मूल्य मिल सके।

डॉ. कुसुमलता झाझड़िया, डॉ. ज्योति एवं डॉ. प्रियदर्शिका शेखावत, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान–अगस्त, 2021

पशु रोग	पशु प्रकार	अत्यधिक संभावना	अधिक संभावना	मध्यम संभावना	बहुत कम संभावना
ब्लेक क्वाटर (बी.क्यु.)	गाय	–	–	–	अजमेर, बारां, बाड़मेर, बीकानेर, बूंदी, जोधपुर, राजसमंद, चुरू
ब्लू टंग रोग	भेड़	–	–	–	बाड़मेर, बीकानेर, कोटा, पाली, उदयपुर, झालावाड़, जोधपुर, नागौर
फड़किया रोग	भेड़, बकरी	सवाईमाधोपुर	–	टोंक	बाड़मेर, जैसलमेर, जयपुर, झुंझुनू, सीकर, उदयपुर, नागौर
गलघोंटू रोग	गाय, भैंस	अलवर, बारां, चित्तोड़गढ़, हनुमानगढ़	–	धौलपुर	अजमेर, बांसवाड़ा, भरतपुर, भीलवाड़ा, बीकानेर, बूंदी, चूरू, दौसा, डूंगरपुर, जयपुर, सिरोही, जालौर, झालावाड़, करौली, कोटा, पाली, प्रतापगढ़, राजसमंद, सवाईमाधोपुर
पी.पी.आर.	बकरी	–	जयपुर	–	भीलवाड़ा, उदयपुर
बोटूलिज्म	गाय		–	–	जैसलमेर
मरेक रोग	मुर्गी	–	–	–	बीकानेर

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें – प्रो. आर.के.सिंह, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर, एवं डॉ. जे.पी. कच्छावा, प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर। फोन नं0 0151–2543419, 2544243, 2201183 टोल फ्री नम्बर 18001806224

सफलता की कहानी

पशुपालन को बनाया आय का मुख्य साधन

हरीमन मीणा पुत्र श्री रामलाल मीणा, ग्राम पंचायत ताखोली, जिला टोंक के निवासी है। हरीमन काफी वर्षों से कृषि के साथ–साथ पशुपालन भी कर रहें है। इन्होंने पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक के वैज्ञानिकों की सलाह अनुसार पशुपालन को मुख्य व्यवसाय मानकर इसको डेयरी व्यवसाय का मूर्तरूप दे चुके है। हरीमन इस व्यवसाय को एक गाय व एक भैंस से प्रारम्भ किया था। वर्तमान में इनके पास कुल 48 छोटे–मोटे पशु है, जिनमें 20 भैंस, 15 बछड़ी, 5 गाय, 7 बकरी तथा एक घोड़ी है परन्तु हरीमन पशुओं की संख्या और अधिक बढ़ाना चाहता है। वर्तमान में यह भैंस की मुर्रा, गाय की साहीवाल, गिर व एच.एफ. तथा बकरी की सिरोही नस्ल का वैज्ञानिक तरीकों से पालन कर रहे हैं। भविष्य में मुर्गीपालन भी करना चाहते है। हरीमन प्रति माह लगभग 1.5 लाख का दूध बेच देते हैं। इसके साथ ही पुष्कर में पशु मेले के अवसर पर आयोजित पशुओं की प्रतियोगिता में भी प्रथम पुरस्कार प्राप्त कर चुके है। यह पशु विज्ञान केन्द्र द्वारा आयोजित पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में निरंतर भाग लेकर पशुपालन से संबंधित जानकारी प्राप्त करते रहते है। पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक के वैज्ञानिकों की सलाह से पशुओं को एंजोला, नेपियर घास, संतुलित आहार, टीकाकरण, कृर्मिनाशक औषधियां तथा खनिज लवण आदि समय–समय पर देते रहते हैं साथ ही पशुओं से संबधित विभिन्न बीमारियों के उपचार, टीकाकरण तथा पशुपालन से संबंधित नई तकनीकों के बारे में भी विचार विमर्श करते रहते हैं। हरीमन पशुपालक के रूप में युवा पीढ़ी के लिए प्रेरणा स्त्रोत है।

सम्पर्क– हरीमन मीणा, ग्राम पंचायत ताखोली (टोंक) मो. 8003730107

बछडे-बछड़ियों की देखभाल वैज्ञानिक तरीकों से कैसे करें

आज की बछड़ी कल की होने वाली गाय है। जन्म से ही उसकी देखभाल रखने से भविष्य में वह अच्छी गाय बन सकती है। यदि बचपन स्वस्थ है तो इनका वजन लगातार तेजी से बढ़ता है, अतः ये अपने सही समय पर गाय बन जाती है। पशुपालक की गाय यदि प्रतिवर्ष बच्चा दे तथा अपने ब्यांत में अधिक से अधिक दूध देवें तो पशुपालन को अच्छा लाभ मिल जाता है। गाय के ग्याभिन होने के आखिरी के दो महीने में गर्भ काफी तेजी से बढ़ता है, तथा इन्हीं दोनों महीनों मे इसकी पाचन शक्ति कम हो जाती है ऐसे में संतुलित पशु आहार खिलाना बहुत जरूरी है। बच्चादानी में तेजी से बढ़ रहे बच्चे की सम्पूर्ण बढ़ोत्तरी के लिए गाय को आखिरी दो महीनों में 2 से 2.5 किग्रा. दाना मिश्रण प्रतिदिन अवश्य खिलाना चाहिए साथ ही इसमें पर्याप्त खनिज लवणों का उचित अनुपात में मिला होना चाहिए। यदि दाना मिश्रण में खनिज लवण नहीं मिले है तो 30 से 40 ग्राम खनिज लवण प्रतिदिन प्रतिपशु देना चाहिए। पशुपालक यदि ऐसा आहार नहीं खिला रहा है तो पशु के ब्याने के बाद कई परेशानियाँ आती है जैसे कमजोरी, जेर अटकना, फूल दिखना (पिच्छा बाहर आना) व मिल्क फीवर आदि प्रमुख हैं।

ब्याने के बाद बछड़े-बछड़ियों की देखभाल कैसे करें-

- जन्म के बाद नवजात का नाक मुंह साफ करें।
- नाल को चार अंगुली नीचे छोटा धागा या रस्सी से बांधकर साफ कैंची या ब्लैड से काटे।
- नाल काटने के बाद नाल पर टिंचर आयोडीन लगावें।
- बछड़े को माँ के सामने रखें ताकि माँ बछड़े को चाटने से बच्चे के शरीर में खून संचरण सही तरीके से होने लगता है।
- जन्म के 06 घण्टें के अन्दर बच्चे को माँ का प्रथम दूध (खीस) पिलायें। यदि हो सके तो दो घण्टे के अन्दर पिलावें। इस खीस को पिलाने से बच्चे को न सिर्फ पोषण मिलता है बल्कि बच्चे में रोग प्रतिरोधक क्षमता का विकास होता है।
- बछडा–बछडियों में 4–5 महत्वपूर्ण बीमारियां होती है उनमें दस्त न्यूमोनिया, नालकी सूजन, व आन्तरिक परजीवी का नियंत्रण समय पर करना चाहिए।
- बछड़े–बछड़ी को उसके जन्म के वजन का 10 प्रतिशत पहले माह तक फिर अगले माह 20 प्रतिशत तीसरे माह 30 प्रतिशत दूध दिन में कम से कम दो बार अवश्य पिलावें।

बछड़े-बछड़ियों को दूध पिलाने की विधियाँ-

सामान्यतः ब्याने से लेकर 90 दिनों तक बच्चे को दूध पिलाना चाहिए फिर दूध बन्द करके दाना, चारा, खिलाना चाहिए। बछड़ा–बछड़ीयों को दूध पिलाने की अलग–अलग विधियाँ प्रचलित है :–

- **माँ के सीधे थनों से**:– पशु के अयन व थनों को साफ करके बच्चे को सीधे माँ के थनों से दूध पिलाना चाहिए।
- **साफ सुथरी बाल्टी से**:– माँ के थनों से दूध निकालकर बाल्टी में डालकर ताजा दूध पिलाना चाहिए। यदि बच्चा ऐसे न पी रहा है तो दूध को गर्म करके व फिर ठण्डा करके पिलाना चाहिए। ध्यान रखना चाहिए कि दूध वजन के अनुसार ही पिलावें वरना बदहजमी व दस्त हो सकते हैं।
- **बोतल से**:– यदि बच्चा उपरोक्त तरीकों से दूध नहीं पी रहा हो तो ताजा दूध को बोतल में भरकर बोतल से पिलाना चाहिए।

ब्याने के एक माह बाद बच्चे को धीरे–धीरे दूध कम करके उसे धीरे–धीरे गेहूँ का चोकर, दलिया, पिसा हुआ मक्का, जौ इत्यादि खिलाना चाहिए। इसको काफ स्टार्टर कहते है, खिलाना चाहिए, परन्तु ध्यान रखें कि बछड़ा–बछड़ी का ये आहार संतुलित हो तथा काफ स्र्टाटर प्रतिदिन 50 ग्राम से 150 ग्राम 03 माह तक, 150 ग्राम से 250 ग्राम 6 माह तक तथा 250 ग्राम से 500 ग्राम 6 माह से 12 माह तक प्रति दिन प्रति पशु देना चाहिए।

तीन माह बाद बछड़ा-बछड़ी की देखभाल-

तीन माह बाद बछड़ा–बछड़ी का दूध बन्द करके मिल्क रिपलेसरव खिलाना शुरू करना चाहिए। काफ स्टार्टर, फिर दाना मिश्रण, हरा चारा तथा धीरे–धीरे सूखा चारा खिलाने की आदत डालनी चाहिए, साथ ही 20 से 25 ग्राम खनिज लवण भी दाना मिश्रण में मिलाकर खिलाना चाहिए। पशु को इच्छानुसार स्वच्छ पानी भी प्रतिदिन पिलाना चाहिए। 6 माह में पशु के आमाशय में रूमेन का विकास हो जाता है। इसके बाद उसको इच्छानुसार हरा चारा तथा सूखा चारा पशु को खिलावें ताकि उसकी बढ़वार अच्छी हो सके जिससे वह 30 से 35 माह की उम्र पर प्रजनन योग्य होकर 40 से 41 माह में अपनी संतति दे सके।

डॉ. राहुल सिंह पाल, डॉ. देवीसिंह एवं डॉ. नीरज शर्मा
वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

निदेशक की कलम से...

मुर्गीपालन : एक रोजगारोन्मुख व्यवसाय

मुर्गीपालन एक महत्त्वपूर्ण व्यवसाय है। यह व्यवसाय पशुपालन का एक अभिन्न अंग बन गया है और पशुपालकों की आय का महत्त्वपूर्ण स्रोत है। भारत में मुर्गीपालन का व्यवसाय ग्रामीण क्षेत्रों में लघु व भूमिहीन किसानों के जीवनयापन का एक माध्यम है, जो कम लागत होने के कारण अतिरिक्त आय अर्जित करने का साधन है। मुर्गीपालन भारत में 8–10 प्रतिशत वार्षिक औसत विकास दर के साथ कृषि क्षेत्र व पशुपालन क्षेत्र का तेजी से विकसित हो रहा एक प्रमुख व्यवसाय है। भारत अभी विश्व का तीसरा सबसे बड़ा अण्डा उत्पादक (चीन व अमेरिका के बाद) तथा चिकन मांस का 5वां बड़ा उत्पादक देश है। कुक्कुट क्षेत्र सकल राष्ट्रीय उत्पाद में करीब 33000 करोड़ का योगदान है जो 352 अरब रूपये से अधिक के कारोबार के साथ यह क्षेत्र 30 लाख से अधिक लोगों को रोजगार उपलब्ध कराता है। मुर्गीपालन न केवल बेरोजगारी जैसी जटिल समस्या का समाधान कर रहा है बल्कि इसमें रोजगार के अवसरों के सृजन की व्यापक सम्भावनाएं भी है। पिछले चार दशकों में मुर्गीपालन व्यवसाय क्षेत्र में शानदार विकास के बावजूद कुक्कुट उत्पादों की उपलब्धता तथा मांग में काफी अन्तर है। वर्तमान में प्रति व्यक्ति वार्षिक 180 अण्डों की मांग के मुकाबले 46 अण्डों की उपलब्धता है। इसी प्रकार प्रति व्यक्ति 11 कि.ग्रा चिकन मीट की मांग के मुकाबले 1.8 कि.ग्रा प्रति व्यक्ति कुक्कुट मीट की उपलब्धता है। इस प्रकार घरेलू मांग को पूरा करने के लिए अण्डों के उत्पादन में चार गुना व मीट उत्पादन में छः गुना वृद्धि किये जाने की आवश्यकता है। जनसंख्या में वृद्धि, जीवनचर्या में परिवर्तन, खाने–पीने की आदतों में परिवर्तन, तेजी से शहरीकरण, प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि, स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता आदि के कारण कुक्कुट उत्पादों की मांग में जबरदस्त वृद्धि हुई है। यही कारण है कि मुर्गीपालन व्यवसाय पिछले दशकों से एक उद्योग के रूप में विकसित हो रहा है। इस व्यवसाय के साथ जुड़े अन्य व्यवसाय जैसे–मुर्गी आहार, जैव उत्पाद, दवाईयां एवं उपकरण बनाने वाले उद्योगों का भी लगातार विकास हो रहा है। भारत में मुर्गीपालन व्यवसाय सामान्य तौर पर संगठित एवं असंगठित पद्धति के रूप में विकसित हुआ है तथा इसे और अधिक संगठित करने की आवश्यकता है।

प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर (मो. 9414283388)

RAJUVAS
e-पशुपालक चौपाल

माह के प्रत्येक द्वितीय एवं चतुर्थ बुधवार को
समय : दोपहर 12.00 बजे से 1.00 बजे तक

राजुवास के आधिकारिक फेसबुक पेज से सीधा प्रसारण
LIVE https://www.facebook.com/RAJUVASOfficialWebPage

पशुचिकित्सा सम्बन्धी जानकारी
प्राप्त करने के लिए
टोल फ्री हैल्पलाईन
1800 180 6224

''धीणे री बात्यां''
पशुपालकों के लिए रेडियो कार्यक्रम
माह के तीसरे गुरुवार को
सायं 5.30 से 6.00 बजे तक
प्रदेश के 17 आकाशवाणी
केन्द्रों से प्रसारण
आकाशवाणी

मुख्य संपादक
प्रो. (डॉ.) आर. के. धूड़िया
संपादक
डॉ. दीपिका धूड़िया
डॉ. मनोहर सैन
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेख/विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवा में

.....

.....

.....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया